गैर मुस्लिमों
के तहवारों
में मुसलमानों
के लीये
रहनुमाई
मुल्लिफ
मुफ़्ती इमरान मेमन

फेहरिस्ते मज़ामीन

म्सअला नंबर		पेज नंबर
१	पेश लफ्ज।	४
२	गैरों के तरीके पर मत चलो।	६
३	एकता के नाम पर ग़ैरों का तरीका इख़्तियार करने का हुक्म।	१०
४	मुशाबहत का मतलब और इबरतनाक किस्सा।	१५
५	दिवाली के दिये, आँगन के रंग, घंटी वग़ैरह बेचने का हुकम।	१९
६	दिवाली का बोनस	२१
७	दिवाली की मिठाई वगैरह खाने की चीज़ का हुक्म।	२२
८	दीवाली का तोहफा।	२३
९	दीवाली पर सफाई।	२४
१०	काली चावदस का हुक्म	२५
११	पटाखे फोड़ने के नुक़सानात	२८
१२	धुलेटी में रंग उड़ाने के नुक़सानात	३२
१३	गैर मुस्लिम का नया साल और न्यू ईयर मनाना।	३५
१४	दिवाली और उन के नए साल की मुबारकबादी देने का हुक्म और जाइज़ शकल।	३७
१५	हैप्पी न्यू ईयर कहना।	४०

१६	गैर मुस्लिमों के तेहवारमें शिरकत और मुबारक-बादी देना।	४९
१७	दिवाली पर मिलने जाना।	४५
१८	दिवाली पर टीचरको मिलने जाना।	४६
१९	बोनी करने का हुक्म।	४८

पेश लफ्ज़

अल्हमदुलिल्लाह मसाइल का सिलसिला "आज का सवाल " के उनवान से ८ आठ साल से जारी है इस में तेहवार,हालत और मव्के की मुनासिबत से भी मसाइल आते रहते है।और थोड़ा थोड़ा कर के एक ही मवजू पर बहोत से मसाइल को अल्लाह ने जमा करा दिया बाज दोस्तों ने खाहिश की के इन मसाइल को पी.डी.एफ. की शकल में जमा कर के शोशयल मीडिया पर आम कर दिया जाए ताके लोगों का फायदा उठाना और फाइदा पहुंचाना आसान हो जाए । लिहाजा अल्लाह पर तवक्कुल कर के ये काम शुरू कर दिया गया है।

दुआ फरमाए अल्लाह तआला इस सिलसिले को मुकम्मल फरमाए और बंदे और बंदे वालीदैन असातीजाह,खुसूसन बंदे के पिरो

मुर्शीद हजरत मुफ्ती अहमद खान पूरी दामत बरकातुहुम ये खिदमात उन की तवज्जुह और दुआ का नतीजा है।(अल्लाह उन के साए को हम पर और उम्मत पर आफियत के साथ ता देर काईम रखे) और तरजमे में तावून करने वाले मेरे दोस्तों के हक में सदह ए जारिया और नजात का जरिया बनाए।किसी को ये रिसाला छापना हो तो ना चीज की तरफ से इजाज़त हैं।

अखीर में नाजीरीन से दरखास्त है के उस में कोई गलती मालुम हो या कोई मुफीद मशवरा तो बंदे मूततले करे जजाकल्लाह।

:: <u>अहकर</u>::

इमरान इस्माइल मेमन

३० मुहर्रम १४४३ हिजरी

३० जुलाई २०२२

गैरों के तरीके पर मत चलो।

कुर्आन का पैगाम

أَعوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطانِ الرَّجيم

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً ۪ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ

الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۲۰۸﴾

तरजमह

इमान वालों इस्लाम में पूरे पूरे दाखिल हो जाओ और शैतान के नक्शे कदम पर मत चलो बेशक वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है

तफ़सीर

अब्दुल्लाह इब्ने सलाम वगैरा सहाबा पहले यहूदी थे फिर मुसलमान हुए यहूदी के नजदीक सनीचर का दिन काबिले ताझीम था और ऊंट का गोश्त और दूध पीना हराम था तो उन्होंने सोचा कि इस्लाम में सनीचर के दिन की ताझीम करना मना नहीं है तो हम ताजिम करें और ऊंट का गोश्त और दूध पीना वाजिब नहीं है तो उस से परहेज करे ऐसा करने में दोनों शरीअत पर अमल हो जाएगा इस पर आयत नाजिल हुई कि जब तुम इस्लाम ले आए तो इस्लाम के तमाम तोरो-तरीक पर अमल करो किसी दूसरी शरीअत के किसी भी चीज पर अमल मत करो इस्लाम मुकम्मल झाब्तए हयात है उसमें अकाइद,इबादात, मुआशरत, मुआमलात, अखलाकियात, पर्सनल लाइफ, इजतिमाइ जिंदगी हर शोबे की मुकम्मल रहनुमाई मौजूद है हमें किसी दूसरे मजहब के तरीके में कोई फायदा देखते हुए या अपन

अक्ल से अच्छा समझते हुए उसे इख्तियार न करें। इस आयत ने बीद्अत और गैरों के तरीके पर चलने का दरवाजा बंद कर दिया है इससे बरेलवी उलेमा की बात पर चलने की और गैरों के तरीके को अपनाने की बहुत अहम समझी जाने वाली दलील का जवाब हो गया कि इस्लाम ने उसे मना नहीं किया है इसलिए हम कर सकते हैं यह शैतानी दलील है जिस की बातों में न आने का इस आयत में हुक्म है शरीअत ने मना नहीं किया जैसे हुजूर सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम के मिलाद पर लाइटिंग करना, सब का बर्थडे मनाना, १२ - रबीउल अव्वल पर जुलूस निकालना वगैरा यह सब गैरों के तरीके है सनीचर का दिन मनाना इस्लाम में कहां मना है यही तो अब्दुल्लाह इब्ने सलाम रझीयल्लाहु तआला ने सोचा था किसी काम को अपने अक्ल से अच्छा समझते हुए उसे दिन में दाखिल करना भी बिद्अत है जैसे क़ब्रों पर फूल, चादर चढ़ाना, दीया, अगरबत्ती करना वगैरा और लिबास, बाल खुशी,गमी के मौके पर किसी ऐसे तरीके की जिसमें

गैर मजहब बल्कि शुयुन की मुशाबहत भी भी होती हो या जिसका शरइ सबूत न हो उसकी इजाजत नहीं। हमें तो गैरों के तरीकों की मुखालफत का हुक़्म है इस्लाम में खुशी और गमी का भी मुकम्मल तरीका बताया है लिहाजा हर शोअबे के दिन पर अमल करना है किसी भी शोअबे के इस्लाम को नहीं छोड़ना है।

📘 सूरह बकरह ⭕ आयत :२०९

📗 तफसीर इब्ने कसीर, मआरीफुल कुर्आन व उस्मानी से माखुझ

एकता के नाम पर ग़ैरों का तरीका इख़्तियार करने का हुक्म ।

क़ुरआन का पैग़ाम

أَعوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطانِ الرَّجيم

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ﴿١﴾ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢﴾ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ

اَعْبُدُ ﴿٣﴾ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ﴿٤﴾ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ﴿٥﴾

لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ﴿٦﴾

तरजमह

- आप कह दीजिये: ऐ इमानसे इंकार करने वालो!
- न तो मैं उस की इबादत करता हूँ जिस की तुम पूजा करते हो

- तुम उस की इबादत नहीं करते जिस की मैं ईबादत करता हूँ
- और न मैं (आइन्दह) उस की इबादत करनेवाला हूँ जिस की इबादत तुम करते हो
- और न तुम उस की इबादत करने वाले हो जिस की मैं इबादत करता हुं।
- तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन है मेरे लिए मेरा दीन है।

तफ़्सीर

चंद सरदाराने क़ुरैश ने के कहा के ऐय मुहम्मद! (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आओ! हम तुम सुलह कर ले के १ साल तक आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हमारे म'अबुदो की पूजा किया करे, फिर दुसरे साल हम आपके म'अबुदो की इबादत करे, इस तरह दोनों फ़रीक़ को हर एक के दीन से कुछ न कुछ हिस्सा मिल जाएगा ।

या कम अज़ कम हमारे बाज़ माबूद को आप सिर्फ हाथ लगा दो तो भी हम आप की तस्दीक़ करेंगे इस पर जिब्रईल अलैहिस सलाम ये सूरत ले कर उतरे।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ख़ुदा की पनाह के में उस के साथ (१ लम्हे के लिए भी) किसी को शरीक ठहराउ।

कहने लगे अच्छा तुम हमारे बाज़ म'अबुदो को मान लो (उन की बुराई न करो) हम तुम्हारी तस्दीक़ करेंगे और तुम्हारे म'अबुद को पूजेंगे। इस पर ये सूरत नाज़िल हुई। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उनको मजमे'अ में पढ कर सुनाई।

जिस का खुलासा मुश्रिकीन के तोरो तरीके से बिलकुल बेज़ारी-बरात के इस इज़हार और त'अल्लुक़ात तोड़ने का ऐलान करता है। भले अम्बिया (अलैहिमुस्सलाम) जिन का पहला काम शिर्क की जडे काटना है। ऐसी नापाक और गन्दी सुलह पर कब राज़ी हो सकते है

? फिल हकीकत अल्लाह के म'अबूद होने में तो किसी मज़हब वाले को इख्तिलाफ ही नहि। खुद मुश्रिकीन उस का इक़रार करते थे और कहते थे के हम बूतो की पूजा इस लिए करते है के ये हम को अल्लाह से नज़दीक कर देंगे ।

مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى 39 ۔ الزمر :3

इख्तिलाफ जो कुछ है अल्लाह और गैरुल्लाह दोनों की पूजा में है। लिहाज़ा सुलह की जो सूरत क़बीला इ क़ुरैश ने पेश की थी उस का साफ़ मतलब ये हुवा के वह बराबर अपने तरीक़े पर क़ाइम रहे। यानी अल्लाह और गैरुल्लाह दोनों की पूजा किया करे और आप अपने मसलक तौहीद से दूर हो जाए। इस गुफ्तुगू मस्लिहत को ख़त्म करने के लिए ये सूरत उतारी गयी है।

इस सूरत से साबित हुवा के नॉन-मुस्लिम के तहेवारो के मौके पर एकता और अख़लाक़ के धोके में उन के अलफ़ाज़ की मुशाबेहत

करते हुवे बिला मजबूरी उनको मुबारकबादी देना जाइज़ नहि, ऐसा करने में उनके कुफ़्र और शिर्क के मज़हब की त'अज़ीम और उसमे बरकत की दुआ और ख़ुशी का इज़हार होता है जीस से उनके शीर्क में एक तरह की शीरकत हो जाती है।

📘 सुरह ए काफिरूंन ⭕ कुल आयत – ६

📗 तफ़्सीर ए उस्मानी व मारीफुल कुरान से माखूज।

मुशाबहत का मतलब और इबरतनाक किस्सा।

म्सअला नंबर : १

➢ जो किसी कोम की मुशाबहत इख़्तियार करे वो उन्ही में से है, इसका क्या मतलब है ? तफ्सील से बताएं।

जवाब

حامدو مصليا و مسلما

हदीस का मतलब ये है के जो शख्स किसी भी गैर कोम - मज़हब वालों की मुशाबहत, नक़्क़ाली और कॉपी उनकी मज़हबी चीजों में उनकी मज़हबी निशानियों, ख़ुशी और गमी में करेगा उसका हश्र यानी क़यामत के दिन उठाया जाना उन्हों के साथ होगा, उसका शुमार भी काफिरों में होगा, यानि उनके लिए अज़ाब और जहन्नम में जाने का फैसला होगा, हश्र का मतलब समझने के अल्लाह ने दुनिया

ही में कई वाकियात हमें दिखा दिए जिसमे से एक मोअतबर वाकिया पेश करता हुं ।

नसरानियों के तोरो तरीके पसंद करने वाले आलिम का इबरतनाक किस्सा।

हज़रत इमामे रब्बानी मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह. ने इरशाद फ़रमाया :

कानपूर में कोई नसरानी जो किसी आला ओहदे पर था, वो मुसलमान हो गया था, मगर असलियत छुपा रखी थी, इत्तेफ़ाक़ से उसका तबादला [ट्रांसफर] किसी दूसरी जगह हो गया, उसने उन मोलवी साहब को जिससे उसने इस्लाम की बातें सीखी थी अपने तबादला से मुत्तला किया, [इत्तेला दी], और तमन्ना की के किसी दीनदार शख्स को मुझे दे, जिससे इल्म हासिल करता राहु, चुनाचे मोलवी साहब ने अपने एक शागिर्द को उनके साथ कर दिया।

कुछ अरसे बाद ये नसरानी [जो मुसलमान हो चूका था] वो बीमार हुवा तो मोलवी साहब के शागिर्द को कुछ रुपये दिए, और कहा के जब में मर जाऊ, और ईसाई जब मुझे अपने कब्रस्तान में दफ़न कराये तो रात को जाकर मुझे वहां से निकाल लेना, और मुसलमानो के कब्रस्तान में दफ़न कर देना।

चुनांचे वैसा ही हुवा, जब मोलवी साहब के शागिर्द ने हस्बे वसिय्यत जब क़ब्र खोली तो देखा के उसमे वो नसरानी नहीं है, अलबत्ता वो मोलवी साहब पड़े हुवे है, तो सख्त परेशान [शर्मिंदा] हुवा के ये क्या माज़रा है..!! मेरे उस्ताद यहाँ कैसे...!!!

आखिर दरयाफ्त से मालूम हुवा के मौलाना साहब नसरानी के तोरो तरीके को पसंद करते थे, और उसे अच्छा जानते थे,

[इरशादाते हज़रत गंगोही रह. सफा ६५]

मेरे भाइयो..!!

ये मोलवी साहब सिर्फ गैरों के तरीकों को पसंद करते थे, उस पर चलते नहीं थे, तो अल्लाह ने दुनिया ही में जिसका तरीक़ा उनको पसंद था उसके साथ हश्र कर दिया,

हम तो गैरो के तरीको पर चलते है..! बल्कि उस पर नाज़ करते है.! और फख्र से मानते है, तो हमारा क्या हश्र होगा..?

सोचो..!!

और अपनी शक्लो सूरत, लिबास, रहन सहन, ख़ुशी गमी में इस्लामी तरीको को लाये और हम गैरों के तेहवार मानाने से बचे.

अल्लाह हमें तौफीक दे. आमीन.

दिवाली के दिये, आँगन के रंग, घंटी वग़ैरह बेचने का हुकम।

म्सअला नंबर : २

- हमारे वालिद साहब दुकान पर दिवाली के दिये, लाइटिंग, आँगन के रंग, पूजा की घंटी, सिन्दूर बेचते है,
- कया ये चीज़ें बेचना जाइज़ है ?
- आमदनी हलाल है ?

जवाब

حامدو مصلیا و مسلما

इन तमाम चीज़ों का जाइज़ ईस्तिअमाल भी है, और ये चीज़ें दूसरे कामों में भी ईस्तिअमाल हो सकती है।

लिहाज़ा उस के नाजाइज़ ईस्तिअमाल की ज़िम्मेदारी बेचने वाले पर नहीं है, बल्के ईस्तिअमाल करने वाले पर है।

लिहाज़ा इन चीज़ों का बेचना जाइज़ और आमदनी हलाल होगी।

📕 फतावा कास्मियाह जिल्द २४ सफा ३२४ से ३२७

बा हवाला शामी और अशबाह से माखूज़ ।

अलबत्ताह दिवाली के मोके पर इन चीज़ों के बेचने से बचना बेहतर है।

📗 किताबुंनवाज़िल १०/२२७ से

واللہ اعلم بالصواب

दिवाली का बोनस

म्सअला नंबर : ३

- दिवाली पर स्टाफ-मज़दूर को बोनस मिलता है वह ले सकते है या नहीं ?

जवाब

حامدو مصليا و مسلما

अगर मालिक ख़ुशी से दे तो ले सकते है.

📗 आप के मसाइल और उन का हल ७/२४१.

واللہ اعلم بالصواب

दिवाली की मिठाई वगैरह खाने की चीज़ का हुक्म।

म्सअला नंबर : ४

➢ दिवाली की मवका हम से ताल्लुक़ रखनेवाले हिन्दू भाई मिठाई कचोरी वगैरह खाने की चीज़ भेजते है तो उस के लेने और खाने का क्या हुक्म है ?

जवाब

حامدو مصليا و مسلما

इन चीज़ों का न लेना बेहतर है. अगर किसी मस्लिहत से ले लिया हो तो इस के खाने को शरअन हराम नहीं कहा जायेगा.

📗 फतावा महमूदिया १८/३३

📗 बहवाला शामी किताबुल कराहियत ६/ ७५५

واللہ اعلم بالصواب

दीवाली का तोहफा।

म्सअला नंबर : ५

➢ दीवाली की मिठाई, पकवान वगैरह का तोहफा लेना कैसा है।

जवाब

حامدو مصليا و مسلما

अगर कोई दीनी नुकसान ना हो तो इन चीजों को न लेना चाहिए।

अगर किसी मसलिहत से ले लिया तो इन चीजों के खाने को हराम नहीं कहा जाएगा ।

📗 फतावा महमूदियाह १८/३३

واللہ اعلم بالصواب

दीवाली पर सफाई।

म्सअला नंबर : ६

➢ दिवाली के मौके पर गैर मुस्लिम की देखा देखि दुकान या माकन साफ करना या रंग रोगन करना केसा है ?

जवाब

حامدو مصليا و مسلما

अगर मक़सूद इन के मज़हब की ताज़ीम और रौनक बढ़ाना है तो न जाइज़ है, अगर सिर्फ सफाई और ज़ीनत मक़सूद हो तो दिवाली से पहले मुशाबेहत पाए जाने की वजह से मना है, सफाई दिवाली बाद कर ले।

📗 फतावा महमूदियाः १८/३३ से ३५ से ३५ और हाशियाह से माखूज़

📘 फतावा क़ाज़ीखान ३/५७७ ८/१५५ से माखूज़.

واللہ اعلم بالصواب

काली चावदास का हुक्म

म्सअला नंबर : ७

- क्या काली चावदास की रात बहुत भारी होती है? क्या मैं आत्मा भक्ति है और जादू होता है रात में बहार नहीं निकलना चाहिए?
- एक मावलाना ने बताया के हदीस से भी इस की तय होती है जिस में है के साल में एक रात ऐसी आती है जिस में आसमान वबा उतरती है लिहाजा क्या रात में पढ़ने के कुछ वजीफे भी बताते थे तो क्या ये बात सही है?

जवाब

حامدو مصلیا و مسلما

इस्लाम में कोई रात या दीन भारी या मनहूस नहीं होता लिहज़ ये अकीदा गलत और हिंदू कौम का अकीदा और वहम है। शरीअत में ऐसा अकीदा रखने की इज्जत नहीं। रही बात उस हदीस

की जिस में है के साल में एक रात आती है, जीस में बिमारीयां नजील होती है। लेकिन जो बर्तन ढंके Lrkin जो बार्टन धनके हुए होते हैं और जिन मसकिजोन-पानी के घर का मुंह बंद होता है हममें नहीं उतरती।

📗 मुसनदे अहमद

इस रात से मुराद कोन सी रात है वो तै नहीं है लिहाजा अपनी तरफ से काली चावदास को तय कर देना सही नहीं लिहाजा बाला नजील होने का इम्कान हर रात में है इस्लिए बार्टन धनकने का हुकम है रात में है हदीस में वबा से बच्चन का इलाज बार्टन धनकना बताता दिया है लिहाजा उस के इलाज के तोर पर अपनी तारफ से वजीफ बताना भी सही नहीं जो चीज अकल के खिलाफ हसीज से सबित हो हम पर अपनी अकल लगाकर दुसरी चीज को सबित नहीं कर सकते हैं रात में कोई खास, खास कोई खास सूरत पढ़ना भी

सही नहीं जो वजैफ दुआ हदीस सबित है वो इस रात में बालके हर रात में पढ़ने चाहिए।

📗 महमूदुल फतवा से मखूज

واللہ اعلم بالصواب

पटाखे फोड़ने के नुक़सानात

म्सअला नंबर : ८

➢ इस्लाम में पटाखे फोड़ना क्यों हराम है ?

जवाब

حامدو مصليا و مسلما

पटाखे फोड़ने में दसयों हराम काम वजूद में आते है और उस में सैकड़ों नुक़सानात है, जिस में से कुछ पेश किये जाते है.

पटाखे फोड़ने के नुक़सानात

१. कानो के पर्दें बार बार तेज़ आवाज़ से कमज़ोर हो जाते है।

२. उस के धुवें से आँखें कमज़ोर होती है।

३. बारूद वाली हवा और धुवा गले में जाती है जिस से गले और फेफड़ें,दिल को नुकसान होता है।नजला,खांसी, दमा,एलर्जी वगैरह बीमारी पैदा होने का खतरा बढ़ जाता है।

४. अपने और दूसरों के जान माल को जोखम में डालना।

५. हाथ पैर मुंह जल जाने का खतराः.और जल जाने के हज़ारों वाक़ियात पेश आ चुके है।

६. रॉकेट से झोंपड़ों और घरो में आग लगना।

७. हवा का प्रदूषण-ख़राब होना वैज्ञानिकों का कहना है लाखों कार का धुंआ जीतना पोल्युसन पैदा करता है उतना पोल्युसन २० मिनिट की आतशबाजी पैदा करती है।

८. रास्तों में कचरे का होना।

९. करोड़ों और लाखों रुपयों की फ़ुज़ूल खर्ची और पैसों की बर्बादी।

१०. बूढ़े बीमार और ताज़ा पैदा शुदा बच्चें चौंक जाते है।

११. पूरी रात पटाखे फूटने से उन को बहोत तकलीफ होती है और उन की नींद ख़राब होती है।

१२. मेटेनरी हॉस्पिटल के क़रीब फूटे तो हामिला-बच्चा जननेवाली माँ परेशान होती है, उस के लिए तो पटाखे घातक हथियार से भी बढ़कर है ताज़ा पैदा होने वाले बच्चे रोने लगते है इन को चुप करना मुश्किल हो जाता है ।

१३. दरख्त के क़रीब पटाखे फूटते है तो परिंदे बहरे हो जाते है।

१४. परींदो के बच्चों का कलेजा फट जाता है और वह मौत के घाट उतर जाते है।

१५. कागज़ जो इल्म हासिल करने का ज़रियाः उस को जला दिया जाता है और लिखे हुवे कागज़ों की बे अदबी होती है, क़ुरान के सफ़े भी बाज़ जगा पाए गए है।

१६. हवा में कार्बन मोनोकसाइड, सलफर ऑक्साइड, हाईड्रॉजन सल्फाइड जैसे जहरीले कैमिकल निकलते है जो हवा को दोषित और सेहत को खराब करते है।

१७.गैर क़ौम की मुशाबेहत और उन के साथ हश्र होना वगैरह वगैरह

📗 इस्लाहुर रसूम सफ़ा १६ १८ इज़ाफ़े के साथ.

واللہ اعلم بالصواب

धुलेटी में रंग उड़ाने के नुक़सानात

म्सअला नंबर : ९

➢ धुलेटी में रंग उड़ाने का क्या हुक्म है? बच्चे भी बहुत खेलते है, तो उस से बचने के लिए क्या करना चाहिए ?

जवाब

حامدو مصليا و مسلما

धुलेटी गैरों का तेहवार है, उस में रंग उड़ाना गैरों की मुशाबेहत की वजह से जाइज़ नहीं, ये ईमान को बर्बाद करनेवाली चीज़ है, इस से खुद भी बचना चाहिए और अपनी अवलाद को भी बचाना चाहिए, उस से बचने के लिए उस के नुक़सानात से लोगों को आगाह करना चाहिए, उस के नुक़सानात हसबे जेल है.

१. रंग आँखों में जाने की वजह से बिनाई -देखने की क़ुव्वत जाने का या उस की रौशनी कम हो जाने का खतरा है, कई अफ़राद को आँखों का नुकसान हर साल होता है।

२. नाक में जाकर फेफड़े में इन्फेक्सशन होने का अंदेशा है।

३. रंग कान में जाता है तो सुनने की क़ुव्वत पर भी असर पड़ता है।

४. रंग और उस का केमिकल चमड़ी पर लगने की वजह से चमड़ी की बीमारियां पैदा होती है।

५. पानी जैसी क़ीमती नेअमत जाये और बर्बाद होती है, अल्लाह को एक एक क़तरे का हिसाब देना होगा।

७. कलर फुग्गे पिचकारी रंग के -साधन खरीदने में पैसों को फ़ुज़ूल खर्च करना. अल्लाह क़यामत में ये भी पूछेगा माल कहाँ खर्च किया? उस वक़्त किया जवाब देंगे।

८. पक्के रंग की वजह से कपड़ों पर से रंग न निकलने की वजह से ख़राब होना।

९. घर और मोहल्ले की दिवार का रंग ख़राब हो जाना।

१०. मोहल्ले और गलियों की कीचड़ और गंदगी का होना।

११. नयी नोटस का रंग से रिजेक्ट हो जाना।

१२.पानी में बार बार भीगने की वजह से सर्दी बुखार हो जाना।

१३. केमिकल वाला रंग उड़ने की वजह से बालों का वक़्त से पहले सुफेद होना और सर में खुजली वग़ैरा पैदा होने से नुक़सान पहोंचना।

१४. जो रंग डाले जाने को पसंद नहीं करते उन पर रंग दाला जाये तो उन को तकलीफ पहुंचती है और बाज़ मर्तबा झगड़ा भी हो जाता है।

अल्लाह हर सख्स को इस से बचने की तोफीक फरमाए।

واللہ اعلم بالصواب

गैर मुस्लिम का नया साल और न्यू ईयर मनाना

म्सअला नंबर : १०

➢ नया साल मनाना या मनाने जाने को और उनकी लाइटिंग इसी तरह उनकी आतिशबाज़ी को देखने जाना कैसा है?

जवाब

حامدو مصلیا و مسلما

नया साल मनाना ये इसाइयां (नसारा - ईसाई) का तारिका है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है, "जिस ने जिस कौम की मुशाबहत (कॉपी-नकल) उतरी कल कयामत में उसे उन्ही के साथ उठायेगा" यानि उसका शुमार भी उनी में होगा।

क़ाज़ी सनाउल्लाह पानीपति रहमतुल्लाह अलैहि ने मसाला लिखा है के कोई शाखा दीवाली में बहार निकले और दिवाली की

(रोशनी-आतिशबाज़ी वागैरा) को देखकर कहे कितना अच्छा तारिका है तो उसके तमं नेक अमाल बरबाद हो जाएंगे।

इसी तरह नया साल मनाने वालों को देखने जाना भी जैज नहीं क्यूं के हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे मुबारक है के "जिस ने जिस कौम की तादाद को बरहाया उसका शूमार भी उन ही मैं होगा", लिहाजा इस रात में बहार रोशनी आतिश देखना जाना, खाने पाइन की पार्टी करना, नए साल की मुबारकबाद देना, नए साल की खुशी मनाना, एक दसरे को गिफ्ट देना वगैरह जीते उनके तारिका है सब ना-जैज और ईमान को बरबाद करनावाले है।

واللہ اعلم بالصواب

दिवाली और उन के नए साल की मुबारकबादी देने का हुक्म और जाइज़ शकल।

म्सअला नंबर : ११

- दिवाली की मुबारकबादी देना जाइज़ नहीं तो मे हिन्दू भाइयों की कंपनी में जॉब करता हूँ तो उन को कैसे विश करूँ? उन को मुबारकबादी न दे तो उन को बुरा लगता है मुफ़्ती साहब कोई जाइज़ सूरत हो तो रहनुमाई फरमाने की दरखास्त।

जवाब

حامدو مصلیا و مسلما

मुबारकबादी देना नजाइज़ होने की दो वजह है, एक उन के तेहवार की ताज़ीम और दूसरे उन से मुशाबेहत।

लिहाज़ा दिल में इन की इस रस्म को बुरा समझते हुवे ऐसे जुमले से उन को मुबारकबादी दी जाये जिस से न उन के तेहवार की अज़मत हो न उन के जुमलों और रस्म से मुशाबेहत तो गुंजाईश मालूम होती है।

मसलन ये जुमला कहा जाये।

दिवाली के इस मौके पर आप को हर काम में सहीह रास्ता मिले।

दिल में सहीह रस्ते से उन की हिदायत मुराद ली जाये।

या नया साल आप के दोनों जहाँ की कामयाबी का ज़रिये बने।

दिवाली के मोके पर ईश्वर आप के भविस्य-फ़िचर को रोशन-प्रकाशित करे.

इंग्लिश में ये कह दे या इंग्लिश may your path be enlightened वगैरह दुआ के जुमले कह दिए जाये।

बेहतर यही है के ख़ामोशी बरती जाये और उन को बुरा लगने की फ़िक्र न की जाये, जब हम शरीअत पर अमल करेंगे तो अल्लाह ताला उन को राज़ी कर देंगे अगरचे वक़्ती तौर पर वह नाराज़ हो जाये।

📘 फतावा महमूदियाः १९/५६७

📗 फतावा बज़्ज़ाज़ियाह ६/३३४ से मुसतमबत.

واللہ اعلم بالصواب

हैप्पी न्यू ईयर कहना

म्सअला नंबर : १२

- क्या हैप्पी न्यू ईयर, साल मुबारक कहना ना-जाइज़ और बिदअत है ?
- क्या इसमें गैरों से मुशाबेहत नहीं ?

जवाब

حامدو مصليا و مسلما

हैप्पी न्यू ईयर कहने में नसारा-खिस्री-क्रिस्चियन क़ौम से मुशाबेहत है।

लिहाज़ा ना-जाइज़ है।

📗 किताबुल फतावा ६/१२५ से माखूज़.

والله اعلم بالصواب

गैर मुस्लिमों के तहवर में शिरकत और मुबारकबाद देना

म्सअला नंबर : १३

- गैर मुस्लिमों को तहर में शारिक होना और उन को मुबारकबाद देना केसा है?

जवाब

حامدو مصليا و مسلما

गेर मुस्लिमो के तहर ज़हीर हे के उने मुशिकाना अकीदे पर बने हुए होते हे, या मुसलमान होने की झिझक से हमारे लिए शिर्क से बारात या हो तल्लुकी का इज़हार ज़रुरी वह, इस्लिये इन तहवारो में मुसलमानो का जज नहीं हो, फुकाहा-मसैल के माहिरिन ने बहुत ताकत से मन किया हे, बालके कुफ्र का फतवा लगा वह। फतवा बज़ाज़ियाह मुझे वह:

الخروج إلى نيروز المجوس والموافقة معهم فيما يفعلونه في ذلك اليوم كفر۔

📗 फतावा बझाझीययाह अला हामीशील हिंदीययाह 333/6.(فتاوى بزازيه على هامش الهندية: 333/6)

इस्लिये के तहर मुशरिकाना फ़िक्र पर हम की बनयाद होती वह, इसलिये उन पर मुबारक बाद देना गोया उनके नुक्ता ए नज़र-सोच या अकीदे की ताईद वह इसलिय उससे भी बचना चाहे, बालके मुबारक बाद देने में कुफ्र का और।

قال مسلم خوب سيرت نهادند يكفر".

📗 तातार खानिययाह : 522/5.

हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुसलमानो ने पारसियो की तरह बसंत के माने की इज्जत चाही तो आप ने इज्जत नहीं दी।

📗 मिश्कत बहावला अबू दाऊद :१४३९ ।

फिर उसमे गेर कौम से मुमासलात-कॉपी भी हे, सूरज निकलाने, सर पर आने या दुबे वक्त नमाज परहने से मन किया गया कियूं के ये सूरज की पूजा करने वाले या दसरी कौमो में इबादत या पूजा पाट का खुशी वक्त ही। (नसाई:583)

तो जब इस्लाम को गेर मुस्लिमो के तेहवारो से, याहा तक के उनकी इबादतो के टाइम मी समानता- शिर्कत भी गवारा नहीं तो उनके तेहवारो में शिरकत कैसे जैज हो शक्ति हे?

बाज लोग इसे मजहबी रावदरी-एकता समाजते हे लेकिन ये नसमझी की बात हे, रावदरी "मजहब फारोशी" -मजहब बेचने का नाम नहीं, ये तो बी ज़मीरी-बेगसिराती की बात होगी, इस्लाम कभी भी इस बात की इज्जत नहीं देता के मुसलमान अकीदे या मजहब के मामले में "लो ... या ... दो" का रवैय्या इख्तियार करे, इस मस्ले में

इस्लाम की गैरत का ये हाल ही के उसे दसरी कौमो से मुशाबहत-नकली इख्तियार करने से रोक दिया।

"من تشبه بقوم فهو منهم"

जान लो के इस्लाम के तमम अहमम की बुनयाद "एकेश्वरवाड़ या तौहीद" पर हे, या उसमे अदा या मामुली दरजे की लचक-धील इख्तियार करने की गुंजाइश नहीं, इस्लियडे पूरी तरह हर्तेह होना या है तारह के मुश्रीकाना अकीदे के मजार जूलस का आपका स्वागत है करना बिलकुल जैज नहीं।

फतवा बज्जियाः ६/३३६ ।

मुफ्ती सिराज सिदत चिखली गुजरात

واللہ اعلم بالصواب

दिवाली पर मिलने जाना

म्सअला नंबर : १४

➢ मज़हबी तहवारो में गैरमुस्लिमों से मिलने जाना केसा है ?

जवाब

حامدو مصليا و مسلما

ये मिलने जाने से उनके तहवार में एक तरह की शिरकत हो जाती है।

लिहाज़ा हराम है।

अगर ऐसा करने को अच्छा समझता हो तो कुफ़्र है।

📘 फतावा-महमूदियाः-१९/५७३।

बाहवाला फ़तवा क़ाज़ीखान / शरहे फिकहुल अकबर से माखूज़

واللہ اعلم بالصواب

दिवाली पर टीचरको मिलने जाना।

➢ म्सअला नंबर : १५

- ज़ैद अपने हिन्दू सर-टीचर को दिवाली के दिन मिलने गया, इस वजह से के सर की तवज्जुह हासिल हो, इम्तिहान में अच्छे नंबर मिले, उन के तेहवार की ताज़ीम की बिलकुल निय्यत नहीं थी, बल्कि ज़ैद हिन्दू के तेहवारों और मज़हबी रसूमात से नफरत करता है।
- तो किया ज़ैद अपने सर को मिलने जाने की इस सूरत में इस्लाम से निकल गया?
- निकाह नए सिरे से पढ़ना पड़ेगा?

जवाब

حامدو مصلیا و مسلما

ज़ैद को सच्चे दिल से तौबा व इस्तिगफार करना ज़रूरी है. कुफ्फार के मज़हबी रसूमात में शिरकत करना हराम है मगर ज़ैद इस्लाम से नहीं निकला. न निकाह टूटा. कियूं के उस के दिल में दिवाली की ताज़ीम नहीं थी बल्कि वह दिल से इन रसूमात से नफरत करता था.

📘 बा हवाला फतावा महमूदियाः ९/४०७ से माखूज़.

📗 जामियूल फतावा २/३५८

واللہ اعلم بالصواب

बोनी करने का हुक्म।

➢ मसअला नंबर : १६

➢ बोनी करना यानी सूबा में माल बिकने या खरीदने की शुरुआत करना। या नए साल की शुरुआत में या किसी तेहवार के दिन माल खरीदना या बेचना ताके पूरा साल अच्छा जाए। इस का क्या हुक्म है?

जवाब

حامدو مصلیا و مسلما

शरीयत में नेकफली - अच्छा शुगून लेना जाईज है। जेसे दिन की शुरुआत अच्छी हुई तो पूरा दिन अच्छा जाएगा।

लेकिन इस नेकफाली मैं को गैर कौम के तेहवार के दिन लेने में उन से मुशबाहत पाई जाति है, और उन के अकीदह अल्लाह के

हुकम के अलावा चीज में असर करने की, और नफा नुक्सान की ताकत है। जिस की वजह से इस कुफ़रीययाह अक़ीदाह की भी ताईद होती है ।

लिहाज़ा उस दिन मुसलमान को बोनी करने की नियत से कोई चीज़ ख़रीदना या बेचना जाइज नहीं। कोई गैर मुस्लिम इस नियात से खरीदता हो, तो बोनी की नियत करे बगैर होना जाइज होगा।

अगलातुल आवाम और फतवा महमूदिया जदीद 19/567और 573 से मखूज।

अगलातुल आवाम और फतवा महमूदिया जदीद 19/567और 573 से मखूज

واللہ اعلم بالصواب